Western Philosophy

अनुभववाद

बर्कले ने उसी का अस्तित्व माना है जिसका इन्द्रियप्रत्यक्ष होता है, अतएव ज्ञान इन्द्रियानुभव द्वारा होता है, इस अनुभव से जो ज्ञान मिलता है, वह प्रत्यय मात्र नहीं होता है बल्कि ज्ञाता से स्वतंत्र वस्तुओं का ज्ञान होता है, यदि वस्तुएँ ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं है, तो इन्द्रियों का सम्पर्क वस्तुओं से नहीं हो सकता है, अतएव अनुभववाद वस्तुनिष्ठ होता है। वस्तुनिष्ठ होने के कारण ज्ञान प्रक्रिया संश्लेषणात्मक होती है। एक-एक मनुष्य को मरते देखकर निष्कर्ष निकाला जाता है कि सभी मनुष्य मरणशील है।

बुद्धिवाद ज्ञान को दिक्-काल के परे मानता है, लेकिन अनुभववाद उसे दिक्-काल की सीमा बांधता है। अतएव जहाँ बुद्धिवाद ज्ञान को असीम और अनन्त मानता है, वहाँ अनुभववाद उसे ससीम और सान्त मानता है। उसके अनुसार प्राप्त ज्ञान संदेहात्मक होता है। उसमे निश्चितता कभी नहीं आ सकती। लॉक का अनुभववाद अंततः ह्यूम में आकर संदेहवाद में परिणत हो जाता है। इसलिए कहा जाता है कि लॉक के अनुभववाद का तार्किक परिणाम ह्यूम का संदेहवाद है।

इस प्रकार अनुभववाद ज्ञान को संदिग्ध, अनिश्चित, संभाव्य और नवीन मानता है, परन्तु जो ज्ञान संदिग्ध और अनिश्चित हो, उसे ज्ञान नहीं कहा जा सकता। ज्ञान वह होता है जो किसी वस्तु की वास्तविकता को बतलाता है, यदि गुलाब लाल है, तो प्रत्येक व्यक्ति को गुलाब की लाली का ज्ञान होना चाहिए, अनुभव से प्राप्त ज्ञान विश्लेषणात्मक होता है।